

---

# Yamakritam Krishnanarayana Stotram

यमकृतं कृष्णनारायणस्तोत्रम्

## Document Information

---

Text title : Yamakritam Krishnanarayana Stotram

File name : yamakRRitaMkRRiShNanarAyaNastotram.itx

Category : vishhnu, vishnu, krishna, lakShmInArAyaNIyasaMhitA, stotra

Location : doc\_vishhnu

Proofread by : PSA Easwaran

Description/comments : lakShmInArAyaNIyasaMhitA | khaNDa 1 | adhyAya 581/72-84||

Latest update : February 5, 2026

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

February 5, 2026

*sanskritdocuments.org*

---

---

## Yamakritam Krishnanarayana Stotram

---

### यमकृतं कृष्णनारायणस्तोत्रम्

---



निःश्वसन्तं य दीनं य स्वाधिकारनिरर्थकम् ।  
यमराजाऽपि नीलाद्रौ श्रीहरिं प्रणिपत्य य ॥ ७० ॥

तुष्टाव श्रीजगन्नाथं स्वाधिकारदृढस्थितौ ।  
नमस्ते यैकतत्त्वाय द्वैतायाऽनन्तकाय य ॥ ७१ ॥

स्वप्नोत्सर्वरूपाय धृतिपुष्टिकराय य ।  
सर्वाभासाधिदेवाय नमस्ते सर्वयोनये ॥ ७२ ॥

विश्वासाय गुरवे साक्षिणे ते नमो नमः ।  
कारुण्यसिन्धवे तुभ्यं परातीताय ते नमः ॥ ७३ ॥

जन्ममृत्युप्रहर्त्रे ते नमोऽस्तु दीनबन्धवे ।  
मायाधिष्ठात्रात्मने ते पीतकौशेयवाससे ॥ ७४ ॥

मायायुक्कर्तनाय यङ्किणे ते नमो नमः ।  
दण्डदारेऽधिकर्त्रे ते परमेशाय वै नमः ॥ ७५ ॥

नीलमेघसुवपुषे नीलाद्रिवासिताय य ।  
नमस्ते पुण्डरीकाक्षिशोभिताय गदाभृते ॥ ७६ ॥

श्रीवत्सकौस्तुभशोभाभासत्समूढवक्षसे ।  
नीलवर्णं नीलशैलगुह्यावासं कृपालयम् ॥ ७७ ॥

आश्रितानां तु दुःखघ्नं प्रणामामि परात्परम् ।  
यत्पादयोराश्रये संल्लुब्धा श्रीरनपायिनी ॥ ७८ ॥

वर्तते शाश्वती लक्ष्मीर्भक्तैश्चर्यप्रदायिनी ।  
या प्रकृतिः पराधीना परेश तव वाञ्छया ॥ ७९ ॥

त्वामावृत्य विकासं सम्प्रयाति बन्धमुक्तये ।  
भुक्तभोगाय चार्पयति निर्वाणतां त्वद्विच्छया ॥ ८० ॥

त्वमेव तु परब्रह्म ब्रह्मरूपेण वर्तसे ।  
भूमरूपेण च व्यूढरूपेण वर्तसे तथा ॥ ८१ ॥  
यमरूपेण च रुद्ररूपेण वर्तसे विभो ।  
लक्ष्मीनारायण विष्णो कृष्णनारायणप्रभो ॥ ८२ ॥  
काम्भरेयमलाराज कृपालो ते नमो मुहुः ।  
प्रभानारायण पार्वतीशनारायण प्रभो ।  
हंसनारायण मञ्जूनारायण नमोऽस्तु ते ॥ ८३ ॥  
सगुणेश तव पत्नीं दृग्भर्त्रीं नमाम्यहम् ।  
पुत्रयिन्तावारयित्रीं धारयित्रीं नमाम्यहम् ॥ ८४ ॥  
एति श्रीलक्ष्मीनारायणीयसंछितायां प्रथमे कृतयुगसन्ताने प८१-अध्यायान्तर्गतं  
यमकृतं कृष्णनारायणस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।  
लक्ष्मीनारायणीयसंछिता । अ१३ १ । अध्याय प८१/७२-८४ ॥

lakShmInArAyaNIyasaMhitA . khaNDa 1. adhyAya 581/72-84..

Proofread by PSA Easwaran

---

——  
*Yamakritam Krishnanarayana Stotram*

pdf was typeset on February 5, 2026

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

